

डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 9, ईसाई नैतिकता के उदार मॉडल

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 9 है, ईसाई नैतिकता के उदारवादी मॉडल।

ठीक है, ईसाई नैतिकता के प्रमुख दार्शनिक और धार्मिक सिद्धांतों का सर्वेक्षण पूरा करने के बाद, सवाल यह है कि ईसाई होने के नाते हमें इनमें से किस सिद्धांत को अपनाना चाहिए? मेरा विचार है कि मैं एक प्रकार के उदारवादी दृष्टिकोण की सिफारिश करूंगा जो इनमें से कई सिद्धांतों की अंतर्दृष्टि की पुष्टि करता है।

यहाँ एक ग्राफ़िक है जो उस उदार मॉडल को दर्शाता है जिसकी मैं अनुशंसा करता हूँ, जो अंतर्दृष्टि की पुष्टि करता है, विशेष रूप से उपयोगितावाद, कांटियन नैतिकता और सद्गुण नैतिकता की। जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, हमारे पास नैतिक सिद्धांत या अंतर्दृष्टि के तीन प्रमुख पहलू हैं जो हमें विशेष नैतिक और सैद्धांतिक परंपराओं से प्राप्त होते हैं, जिनके बारे में मेरा मानना है कि किसी भी ईसाई नैतिकता में उनकी पुष्टि और मान्यता होनी चाहिए। उन चिंताओं में से एक उपयोगिता और परिणामों के बारे में है जो विशेष रूप से हमारे द्वारा किए गए कार्यों के सुखद या दर्दनाक परिणामों से संबंधित हैं।

कर्तव्य, कर्तव्यनिष्ठ घटक, दायित्व, न्याय और अधिकार जैसी चीज़ों पर विचार, यह अपरिहार्य है, मैं तर्क दूंगा। सद्गुण, जो साहस, उदारता, धैर्य, दयालुता और आत्म-नियंत्रण जैसे चरित्र लक्षणों को संदर्भित करता है, वही है जिसे प्रेरित पौलुस आत्मा का फल कहते हैं। और हम पवित्रशास्त्र में नैतिकता के इन तीनों क्षेत्रों के बार-बार संदर्भ देखते हैं।

पुराने नियम के कानून से लेकर नए नियम तक, हमारे कार्यों के परिणामों पर बार-बार ध्यान दिया गया है। और भले ही उन कार्यों की उपयोगिता, जैसा कि बेंथम ने कहा, स्पष्ट रूप से चर्चा नहीं की गई है, फिर भी शास्त्र में हमारे कार्यों के परिणामों और हमारे आचरण से दूसरे लोगों पर पड़ने वाले प्रभाव पर बहुत ध्यान दिया गया है। धर्मग्रंथों में कर्तव्य संबंधी चिंताओं, बहुत से नियमों और आदेशों, और अधिकारों, न्याय और दायित्वों के बहुत से संदर्भों पर भी बहुत ध्यान दिया गया है।

तो यह निश्चित रूप से पवित्रशास्त्र में एक महत्वपूर्ण जोर है। और फिर, जब सद्गुण की बात आती है, तो पुराने नियम और नए नियम दोनों में, सद्गुणी तरीके से कार्य करने के लिए बहुत अधिक समर्थन और प्रोत्साहन दिया गया है। फिर से, पॉल ने गलातियों में आत्मा के फल के रूपक का उपयोग किया है।

तो, ये सभी एक संपूर्ण ईसाई नैतिकता के महत्वपूर्ण पहलू हैं क्योंकि इन पर पवित्रशास्त्र में भी जोर दिया गया है। तो, हम यह भी देख सकते हैं कि एक संपूर्ण नैतिक सिद्धांत के ये तीनों पहलू

यीशु मसीह के जीवन और चरित्र में पूरे हुए या दर्शाए गए हैं। तो, यीशु ने इन तीनों क्षेत्रों को पूरा किया।

वह कानून का पूरी तरह से पालन करता था। आप कह सकते हैं कि उसने जो कुछ भी किया, उससे लोगों को अधिकतम लाभ हुआ और उसके कार्यों और उसके शब्दों के परिणामों के संदर्भ में लोगों को अधिकतम लाभ हुआ। और उसने सभी सद्गुणों, आत्मा के सभी फलों को पूरी तरह से प्रदर्शित किया।

इसलिए, मैं तर्क दूंगा कि किसी भी नैतिक सिद्धांत को जिसे हम ईसाई कह सकते हैं या कह सकते हैं, इन सभी तत्वों को शामिल करने की आवश्यकता है। कोई भी सिद्धांत जो केवल इन नैतिक विचारों में से किसी एक पर ध्यान केंद्रित करता है, वह मूल रूप से एक छोटा ईसाई नैतिकता, एक अपूर्ण ईसाई नैतिकता है। यह हमें इन प्रमुख नैतिक सिद्धांतों की सभी अंतर्दृष्टियों को देखने के लिए भी आमंत्रित करता है, भले ही वे धर्मनिरपेक्ष दार्शनिकों से आते हों, ईसाई सत्य में वास्तविक अंतर्दृष्टि के रूप में।

जैसा कि होता है, इनमें से प्रत्येक सिद्धांत के प्रमुख समर्थक ईश्वर में विश्वास करने वाले थे। उदाहरण के लिए, कांट के मामले में, और जॉन हैरिस ने जो तर्क दिया, वह जॉन स्टुअर्ट मिल के मामले में भी सच है; उनका मानना था कि आप वास्तव में ईश्वर के बिना नैतिकता को सही तरीके से नहीं कर सकते। यह निश्चित रूप से कांट का दावा था कि नैतिकता की संभावना के लिए तीन चीजें बिल्कुल आवश्यक हैं: ईश्वर, स्वतंत्रता और अमरता।

ईश्वर के बिना, हमारे पास कोई न्यायाधीश नहीं है, और हमारे पास कोई ऐसा नहीं है जो हमें नैतिक कानून के प्रति जवाबदेह ठहराए। अमरता के बिना, न्याय का सामना करने और जवाबदेह ठहराए जाने के लिए कोई अस्तित्व नहीं है। और स्वतंत्रता के बिना, नैतिकता असंभव है क्योंकि यदि आप कुछ हद तक स्वतंत्र नहीं हैं, तो आप अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार नहीं हो सकते।

किसी भी मामले में, कांट के लिए, नैतिकता की संभावना के लिए ईश्वर बिल्कुल महत्वपूर्ण है। और अरस्तू भी एक तरह से आस्तिक थे। जब बात अरस्तू और उनके कार्य-कारण के दृष्टिकोण, विशेष रूप से उद्देश्य संबंधी कारणों की आती है, तो कोई यह तर्क दे सकता है कि उनकी नैतिकता अंततः ईश्वर पर निर्भर करती है।

तो फिर, यहाँ मेरा ग्राफ़िक है, बीच में क्रॉस है, जिसका उद्देश्य खंजर जैसा दिखना नहीं है, लेकिन इसका उद्देश्य फिर से यह विचार व्यक्त करना है कि मसीह ने इन तीनों क्षेत्रों को पूरा किया और सभी नैतिक सत्य को मूर्त रूप दिया। तो यह नैतिक अच्छाई की प्रकृति का मेरा उदार विश्लेषण है। हम नैतिक ज्ञान के स्रोतों के बारे में भी बात कर सकते हैं, और मुझे लगता है कि यहाँ एक उदार दृष्टिकोण भी मददगार है।

अंततः, जब हम नैतिकता के बारे में बात कर रहे हैं, तो हम ईश्वर की नैतिक इच्छा के बारे में बात कर रहे हैं, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं जब हमने यूथिफ्रो समस्या के बारे में बात की थी,

कि ईश्वर की प्रकृति नैतिक सत्य को परिभाषित करती है। तो, ईश्वर हमें अपना नैतिक सत्य कैसे बताता है? वह हमें कैसे बताता है कि नैतिक सत्य क्या है? यहाँ, मुझे लगता है कि हम प्राकृतिक कानून नैतिकता और ईश्वरीय आदेश नैतिकता दोनों की अंतर्दृष्टि की पुष्टि कर सकते हैं। तो, ईश्वर हमें प्राकृतिक कानून के माध्यम से, प्राथमिक और द्वितीयक उपदेशों के माध्यम से अपनी नैतिक इच्छा बताता है जिसे हम प्रकृति और अपने स्वयं के शरीर से पढ़ सकते हैं।

लेकिन साथ ही, वह हमें विशेष रहस्योद्घाटन के माध्यम से भी संवाद करता है, खास तौर पर पुराने और नए नियम की किताबों में। अब, मैं आगे जाकर कहूँगा कि प्राकृतिक कानून, ईश्वर के प्राकृतिक नुस्खों के माध्यम से जिसे उसने प्रकृति के ताने-बाने में बुना है, उपयोगिता के बारे में सच्चाई के रूप में हमसे संवाद करता है। किस तरह के कार्यों से अच्छे परिणाम मिलने की अधिक संभावना है और कर्तव्य की भावना के माध्यम से भी हमसे संवाद होता है?

और, कई लोग तर्क देंगे, जॉन कैल्विन तर्क देंगे, कि कैल्विनवादी परंपरा में से कई लोग ईश्वर के प्रति एक प्रकार की प्राकृतिक भावना या जागरूकता का रूप ले सकते हैं, जिसे वे सेंसस कहते हैं। ईश्वर ने हमें जो न्यायिक भावना और विवेक दिया है, वह हमें सामान्य रूप से उन बुनियादी कर्तव्यों और दायित्वों के बारे में जागरूक बनाता है जो हमारे पास हैं।

तीसरा, सद्गुण के क्षेत्र के माध्यम से, चरित्र लक्षण जिनकी हम प्रशंसा करते हैं, हम ऐसे लोगों को पाते हैं जो उदार और दयालु और साहसी हैं, अधिक आकर्षक हैं, और हमारे पास ऐसे लोगों के लिए स्वाभाविक प्रशंसा है जिनमें ये गुण हैं।

प्राकृतिक कानून के माध्यम से ईश्वर द्वारा अपनी नैतिक इच्छा को हम तक पहुँचाने के एक प्रकार के परिणाम के रूप में समझा जा सकता है। और फिर अंत में, विशेष प्रकाशन के संदर्भ में और ईश्वर की नैतिक इच्छा हमें उस रूप में कैसे बताई जाती है, मुझे लगता है कि यह ध्यान रखना सहायक होगा कि ईश्वर हमें शास्त्रों में नैतिक सत्य को बताने के कई अलग-अलग तरीके हैं। बाइबिल के पाठ कई तरह के रूप लेते हैं।

हमारे पास शास्त्रों में ऐतिहासिक रचनाएँ, काव्य रचनाएँ, सर्वनाश संबंधी रचनाएँ और भविष्यसूचक कथाएँ हैं। बाइबिल के ग्रंथों में हमें बहुत सारे साहित्यिक रूप मिलते हैं। कथाओं में, हमें इस बारे में बहुत स्पष्ट संचार मिलता है कि किस तरह के व्यवहार से किस तरह के परिणाम मिलते हैं, अच्छे और बुरे, लाभकारी और हानिकारक, जो नैतिक उपयोगिता के बारे में अंतर्दृष्टि के साथ मेल खाते हैं।

और फिर हमारे पास शास्त्रों में ये सभी आदेश हैं, जो कर्तव्य और दायित्व और अधिकारों जैसी अन्य नैतिक अवधारणाओं के साथ मेल खाते हैं। फिर, हमारे पास शास्त्रों से विभिन्न चरित्र चित्र हैं। जब हम विशेष व्यक्तियों और उनके चरित्र लक्षणों का अध्ययन करते हैं, तो हम सद्गुण के बारे में अपनी समझ को काफी हद तक विस्तारित और पूर्ण कर सकते हैं।

अगर हम डेविड या मूसा या एलिय्याह, खासकर यीशु का चरित्र अध्ययन करें। दूसरी तरफ, हमारे पास शास्त्रों में सभी प्रकार के पापी चरित्र भी हैं, जैसे हामान और यहूदा इस्करियोती, मिस्र

के फिरौन जिन्होंने मूसा, पोंटियस पिलातुस और हेरोदेस का विरोध किया था। और हम उन चरित्रों का अध्ययन करके बुराइयों के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं।

तो, बाइबिल के रहस्योद्घाटन के वे तीन आयाम उपयोगिता, कर्तव्य और सद्गुण की हमारी समझ को और बढ़ाते हैं। तो यह ईसाई नैतिकता का मेरा उदार मॉडल है।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 9 है, ईसाई नैतिकता के उदार मॉडल।